1

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 47, अंक 37 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 29 जुलाई, 2024 से रविवार 4 अगस्त, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081 सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

वेद परिवार निर्माण अभियान
50 मंत्र - 1 परिवार
वेद मंत्र कंठस्थ करने के अभियान में भाग लेने हेतु
9810936570 या 9911140756 पर व्हाट्सएप्प करें

आर्यसमाजें हर्षोल्लास और उत्साह के साथ मनाएं श्रावणी उपाकर्म, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं वेद प्रचार सप्ताहों का करें भव्य आयोजन

श्रावणी एवं वेद प्रचार सप्ताह कार्यक्रमों के अवसर पर विशेष

आओ जानें, स्वाध्याय की महिमा और वेदादि शास्त्रों का परिचय

हमारे ऋषि-मुनियों और पूर्वज महापुरुषों ने मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन स्वाध्याय को माना है। क्योंकि स्वाधयाय करने वाले मनुष्य का आत्मबल बढ़ता है, ज्ञान में वृद्धि स्वाधयाय से ही संभव होती है, हजारों-लाखों वर्षों पहले के महापुरुषो के विचारों-जीवन वृतांतों को पढ़कर उनकी संगति का लाभ मिलता है, नया दृष्टिकोण और नई सोच का उदय होता है, मन की एकाग्रता शांति-संतुष्टि का साधान भी स्वाधयाय है, जीवन विकास के सूत्रों की प्राप्ति स्वाधयाय से होती है, जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य की प्राप्ति के लिए स्वाधयाय नियमित रूप से करना चाहिए। योगशास्त्र टीका में महर्षि व्यास लिखते हैं कि मोक्षशास्त्र व आत्मशास्त्र का पाठ करना स्वाध्याय कहाता है। वेदों के मंत्र, जिनमें आत्मा और परमात्मा संबंधी विषय हैं, उपनिषद, योगदर्शन, वेदांत दर्शन, गीता, ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका के प्रार्थना, स्तुति और उपासना के विषय, सत्यार्थ-प्रकाश और महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ग्रंथों का विशेष रूप से स्वाध्याय करने से मनुष्य ज्ञान-मार्ग की ओर बढ़ता है। यथार्थ ज्ञान ही मुक्ति का सच्चा द्वार है। स्वाधयाय करने से सब इष्ट पदार्थ प्राप्त होते हैं। ईश्वर की असंख्य शक्तियां स्वाध्यायशील मनुष्य की पूरी सहायता करती हैं। इससे -ऋषि-ऋण से मुक्ति मिलती है। स्वाध्याय से हम प्रतिदिन प्रात:काल -ऋषि-मुनियों से मिलाप कर सकते हैं। -ऋषि दयानन्द अपने अंतिम दिनों तक स्वाधायाय करते रहे थे। स्वाध्याय नित्य प्रात:काल जिस प्रकार भी हो सके, थोड़ा-बहुत समय निकालकर करना चाहिए। स्वाध्याय बुद्धि को तीव्र और आत्मा को उज्ज्वल बनाता है।

वेदादि शास्त्रों का परिचय

वेद ईश्वर की अमृत वाणी है। वेद अपौरुषेय हैं। वेद 'विद्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है- ज्ञान। सृष्टि के आदि में ईश्वर ने अग्नि, वायु, आदित्य अंगिरा ऋषियों के हृदय में वेदों का प्रकाश किया। अत: वेद प्रसूत धर्म ही शाश्वत व सार्वभौमिक धर्म है। शेष सभी तथाकथित धर्म-बौद्ध, जैन, यहूदी, पारसी, ईसाई व इस्लाम सम्प्रदाय हैं, जो निश्चित अवधि पूर्व अपने संस्थापकों द्वारा स्थापित किए गये। वैदिक धर्म प्राणीमात्र हेतु कल्याणकारी, तार्किक तथा पूर्ण वैज्ञानिक है।

वेदों की शाखाएं

वेद की शाखा का अर्थ पठन-पाठन का क्रम ही है, शैली है। जो ऋषि वेद के मूल मंत्र को जिस क्रम से पढ़ते थे, केवल वह अमुक शाखा के नाम से प्रसिद्ध हो जाता था। शाखाएं वेद के विभाग की बोधक नहीं हैं। प. सत्यव्रत सामश्रमी ने अपने ग्रन्थ में स्पष्ट करते हुए लिखा है कि वेद की शाखाएं वृक्षों या नदियों की शाखाओं की भांति नहीं, अपितु पठन-पाठन का भिन्न प्रकार है। शाखाओं का काल बहुत प्राचीन है। शाखाओं के कारण ही गोत्रों का प्रचार भी हुआ।

- शेष पृष्ठ 3 पर

महर्षि दयानन्द के 200वें जयन्ती वर्ष एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष की दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन न्यूयार्क (अमेरिका)

आशातीत सफलताओं के साथ होफ्स्ट्रा यूनिवर्सिटी में 18-21 जुलाई, 2024 सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष के दो वर्षीय आयेजनों की श्रृंखला में सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा न्यूयॉर्क में आयोजित चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अत्यंत उमंग, उत्साह, उल्लास और खुशियों के वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर भारत सहित विश्व के कई देशों से आर्य प्रतिनिधियों और हर आयु वर्ग के महानुभाव उपस्थित हुए। इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका एवं आर्य समाज ट्राई स्टेट तथा अमेरिका की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारी और कार्यकर्ताओं ने सम्मेलन में आए हुए अधिकारी महानुभावों, अतिथियों का हृदय की गहराइयों से भावपूर्ण स्वागत किया। चार दिवसीय आयोजन का प्रतिदिन प्रात:काल व्यायाम, योग और यज्ञ से आरंभ हुआ। इसके उपरांत विभिन्न सम्मेलन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामूहिक भजन, बच्चों की प्रतियोगिताएं और अन्य अनेक गतिविधियां सुचारु रूप से चलती रही। विश्व भर से आए हुए सभी अधिकारियों का आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के द्वारा स्वागत और सम्मान भी किया गया। आर्य संदेश के गत अंक में हमने अमेरिका अंतर्राट्रीय आर्य महासम्मेलन का समाचार विस्तार से प्रकाशित किया था।

इस अंक के पृष्ठ-4-5 पर प्रस्तुत हैं कुछ ऐतिहासिक प्रेरक के चित्रों की झलकियाँ ....

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता

कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

प्रथम पुरस्कार :
1 लाख रुपये एवं विशेष उपहार।
द्वितीय पुरस्कार :
51 हजार एवं विशेष उपहार (2)
तृतीय पुरस्कार :
31 हजार एवं विशेष उपहार (3)
चतुर्थ पुरस्कार :
5100/- एवं विशेष उपहार (25)
पांचवा पुरस्कार :
नकद 2100/- रुपये (100)
छठा पुरस्कार :
नकद 1000/- रुपये (250)
सातवां पुरस्कार :
नकद 500/- रुपये (250)

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

नियम व शर्तें -

1. इस प्रतियोगिता में अधिकतम 18 वर्ष तक की आयु के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। सभी प्रश्नोत्तर इसी कॉमिक पुस्तिका में हैं।

2. उत्तर पत्र पूर्ण रूप से भरकर दिए गए कॉलम में अपना व विद्यालय का पूरा नाम व पता (पिन कोड सहित), फोन नम्बर, आयु, अवश्य भरें तथा पते के अन्त में राज्य का नाम अवश्य लिखें। (यदि विद्यालय के माध्यम से भाग न ले रहे हों तो सम्बन्धित संस्था का नाम अवश्य भरें। जैसे गुरुकुल, आर्य समाज, आर्यवीर दल की शाखा आदि।)

- शेष पृष्ठ 7 पर

देववाणी-संस्कृत

प्रभु हमारे भीतर वैदिक सत्य को जागृत् कर दें।

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि। स इद् देवेषु गच्छति।।
- ऋ० 1/1/4
ऋषिः - मधुछन्दाः।। देवता - अग्निः।। छन्दः -

शब्दार्थ-अग्ने = हे परमात्मन्! **त्वम्** = **यम्** = जिस अध्वरं **यज्ञम्** = कुटिलता तथा हिंसा से रहित यज्ञ को **विश्वतः परि भूः असि** = सब ओर से व्याप लेते हो **स इत्** = केवल वही यज्ञ **देवेषु गच्छति** = दिव्य फल लाता है।

विनय- हम कई शुभ अभिलाषाओं से कुछ यज्ञों को प्रारम्भ करते है और चाहते हैं कि या सफल हो जाएँ, परन्तु हे देवों के देव अग्निदेव! कोई भी यज्ञ तब तक सफल हो जाएँ, परन्तु हे देवों के देव अग्निदेव! कोई भी यज्ञ तब तक सफल नहीं हो सकता जबतक उस यज्ञ में तुम पूरी तरह न व्याप रहे हो, चूँकि जगत् में तुम्हारे अटल नियमों व तुम्हारी दिव्य शक्तियों के आर्थात् देवों के द्वारा ही सब-कुछ सम्पन्न होता है। तुम्हारे बिना हमारा कोई यज्ञ कैसे सफल हो सकता है? और जिस यज्ञ में तुम व्याप्त हो वह यज्ञ अध्वर (ध्वर अर्थात् कुटिलता और हिंसा से रहित) तो अवश्य होना चाहिए, पर जब हम यज्ञ प्रारम्भ करते हैं, कोई शुभ कर्म करते हैं, किसी संघ-संघठन में लगते हैं, परोपकार का कार्य लगते हैं तो मोहवश तुम्हें भूल जाते हैं। उसकी जल्दी सफलता के लिए हिंसा और कुटिलता से भी काम लेने को उतारू हो जाते हैं। तभी तुम्हारा हाथ हमारे ऊपर से उठ जाता है। ऐसा यज्ञ तुम्हारे देवों की स्वीकृत नहीं होता, उन्हें नहीं पहुँचता-सफल नहीं होता। हे प्रभो! अब जब कभी हम निर्बलता के वश अपने यज्ञों में कुटिलता व हिंसा का प्रवेश करने लगें और तुझे भूल जाएँ तो है प्रकाशक देव! हमारे अन्तरात्मा में एक बार इस वैदिक सत्य को जगा देना (हमारा अन्तरात्मा बोल उठे कि ''हे अग्ने! जिस कुटिलता व हिंसा-रहित यज्ञ को तुम सब ओर से घेर लेते हो, व्याप लेते हो, केवल यही यज्ञ देवों में पहुँचता है, अर्थात् दिव्य फल लाता है-सफल होता है।' सचमुच तुम्हें भुलाकर, तुम्हें हटाकर यदि कसी संगठन शक्ति द्वारा कुटिलता व हिंसा के जोर पर कुछ करना चाहेंगे तो चाहे कितना घोर उद्योग करें पर हमें कभी सफलता न मिलेगी।

वेद-स्वाध्याय

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

ब्यूटी इंस्टीट्यूट में चल रहा था धर्मांतरण का खेल !!

लैक्मे एकेडमी, मुरादाबाद की डायरेक्टर है सपना, जिन्हें रक्शंदा खान के नाम से भी जाना जाता है। 22 जुलाई को इस लैक्मे एकेडमी की दो छात्राएं, तान्या चौधरी और स्वाति पाल, और एक छात्र डीएम ऑफिस पहुंचे और उन्होंने लिखित में एक शिकायत पत्र देते हुए आरोप लगाया कि रक्शंदा खान हिंदू लड़कियों को धर्मांतरण करने और मुस्लिम लड़कों से शादी करने के लिए उकसाती हैं। आरोप में यह भी कहा गया है कि रक्शंदा खान हिंदू लड़कियों को जानबूझकर मुस्लिम लड़कों के साथ ग्रुप में रखती हैं और उन्हें दोस्ती करने के लिए उकसाती हैं। रक्शंदा ने इसके लिए बाकायदा मुहिम चला रखी है। यह मुहिम न केवल रक्शंदा खान पर है, बल्कि उसके अलावा भी जो आरोप लगे हैं, वे बेहद घिनोने हैं।

उत्तर प्रदेश का एक जिला है मुरादाबाद। इस मुरादाबाद के कांठ रोड पर हरथला पुलिस चौकी के सामने है लैक्मे एकेडमी। यह एक ब्यूटी कम्पनी की फ्रेंचाइजी है, लेकिन अब यह विवादों में घिर गई है। यह विवाद को सामान्य नहीं है, बल्कि जबरन धर्मांतरण को प्रोत्साहित करने के लिए है। दरअसल, इस लैक्मे एकेडमी की डायरेक्टर है सपना, जिन्हें रक्शंदा खान के नाम से भी जाना जाता है। 22 जुलाई को इस लैक्मे एकेडमी की दो छात्राएं, तान्या चौधरी और स्वाति पाल, और एक छात्र डीएम ऑफिस पहुंचे और उन्होंने लिखित में एक शिकायत पत्र देते हुए आरोप लगाया कि रक्शंदा खान हिंदू लड़कियों को धर्मांतरण करने और मुस्लिम लड़कों से शादी करने के लिए उकसाती हैं। आरोप में यह भी कहा गया है कि रक्शंदा खान हिंदू लड़कियों को जानबूझकर मुस्लिम लड़कों के साथ ग्रुप में रखती हैं और उन्हें दोस्ती करने के लिए उकसाती हैं। रक्शंदा ने इसके लिए बाकायदा मुहिम चला रखी है। यह मुहिम न केवल रक्शंदा खान पर है, बल्कि उसके अलावा भी जो आरोप लगे हैं, वे बेहद घिनोने हैं।

मुरादाबाद की लैक्मे एकेडमी वाली यह खबर भले ही सोशल मीडिया पर बजट और कावड़ यात्रा पर ढाबे के नाम विवाद पर चलते ना उभर पाई हो, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि यह कोई छोटी-मोटी घटना है। क्योंकि लैक्मे एकेडमी और रक्शंदा खान पर यह ना तो पहला आरोप है और ना शायद आखिरी। पूरा किस्सा कुछ इस तरह है यूपी के कानपुर के साकेत नगर में 5 बहनें और 1 भाई का हिन्दू परिवार था। इस परिवार की बहनों में सबसे छोटी एक लड़की थी सपना। किस्सा करीब 16 साल पहला है। सपना जब कानपुर में रहती थी तब शहनवाज खान ने उसे अपने प्रेम जाल में उलझा लिया। सपना ने अपना घर छोड़ा, धर्म छोड़ा और शहनवाज खान के साथ निकाह किया और बन गई रक्शंदा खान।

रक्शंदा खान पहले तो कानपुर में रही, फिर अपने शौहर के साथ मिलकर मुरादाबाद में लैक्मे एकेडमी के नाम से काम शुरू किया। उनकी लैक्मे एकेडमी में सौंदर्य उत्पादों के जरिए खूबसूरत बनाने के द्वारा ट्रेनिंग दी जाती है। रक्शंदा खान की लैक्मे एकेडमी में भी कोर्स के लिए एडमिशन शुरू हुए लेकिन एडमिशन लेने वालों को नहीं पता था कि यहाँ सौंदर्य बनाने की ट्रेनिंग के साथ-साथ मुस्लिम बनाने की ट्रेलनग भी दी जा रही है।

यह हम नहीं कह रहे हैं, यह एक ऐसा आरोप है। पिछले साल 5 म 2023 को जब फिल्म 'द केरल स्टोरी' रिलीज़ हुई थी, तब धर्मांतरण की चर्चा जोरों पर थी। ठीक उसी दौरान, 17 मई को रक्शंदा खान की लेक्मे एकेडमी में कोर्स कर रहे राज राणा नामक एक लड़के ने धर्म परिवर्तन की मुहिम चलाने का आरोप लगाकर मुरादाबाद में एक न खबर को जन्म दे दिया। राज राणा नामक लड़के ने थाना सिविल लाइंस में तहरीर दी थी। तहरीर में साफ आरोप है कि रक्शंदा खान एकेडमी में ट्रेनिंग देने के बजाय इस्लाम का प्रचार कर रही हैं। राज राणा ने इसमें बताया था कि दर्जनों लड़कियां जो पहले हिन्दू थी, वो रक्शंदा खान द्वारा ब्रेनवाश होकर मुस्लिम बन गई हैं।

राज राणा ने कहा था कि उन्होंने अक्टूबर 2022 में एकेडमी के एडवांस मेकअप कोर्स में एडमिशन लिया था, जिसके लिए उन्होंने 72 हजार रुपए जमा किए थे। शुरू में सब ठीक था, लेकिन बाद में उन्हें लगा कि इस इंस्टीट्यूट में मेकअप ट्रेनिंग के बजाय इस्लाम का प्रचार हो रहा है। एकेडमी में पूरे दिन इस्लामिक सांग बजते हैं, जैसे कि नज्म और आयत। इसके अलावा, एकेडमी की हेड रक्शंदा खान खुद इस्लाम के बारे में स्पीच देती हैं और इस्लामिक लिटरेचर पर ज्ञान देती हैं। इंस्टीट्यूट में मुस्लिम लड़के नमाज भी पढ़ते हैं। लेकिन जब राज राणा ने माथे पर टीका लगाने के साथ इंस्टीट्यूट में जाने की कोशिश की, तो रक्शंदा खान ने टीके के साथ इंस्टीट्यूट में प्रवेश करने को रोक दिया। राज राणा के आरोप केवल इतने भर नहीं थे, बल्कि उसने यह भी बताया था कि एक दिन एकेडमी हेड रक्शंदा खान उसके पास आईं। उससे कहा जानते हो राज, मैं क्षत्रिय ठाकुर हूं। मैं भी पहले हिंदू थी लेकिन बाद में इस्लाम कबूल कर मुस्लिम बन गई । इसके बाद रक्शंदा ने इस्लाम के बारे में बताते हुए राज का ब्रेनवाश करने की कोशिश की। उसने कुरान और इस्लामिक लिटरेचर के बारे में काफी देर तक समझाया।

इतना ही एक साल पहले राज राणा ने यह भी आरोप लगाया था कि एकेडमी में सभी ट्रेनर मुस्लिम लड़के हैं। जबकि यहां ट्रेनिंग ले रही ज्यादातर लड़कियां हिंदू हैं। रक्शंदा के साथ ही उनके ट्रेनर भी इंस्टीट्यूट में इस्लाम का प्रचार करते हैं। हिंदू लड़कियों का ब्रेनवाश करने की मुहिम चल रही है। तब इस मामले में हिन्दू संगठनों के कार्यकर्ताओं ने एकेडमी पर प्रदर्शन कर नारेबाजी की थी। पुलिस ने जांच की बात कहकर मामले को शांत कर दिया था। अब इन बातों को करीब 16 महीने बीत चुके हैं। अब 16 महीने बाद एक बार फिर एकेडमी और उसकी हेड रक्शंदा खान के खिलाफ मामला उछला है। इस बार मामले को उठाने वाली दो लड़कियां और एक लड़का हैं। जिनका कहना है कि रक्शंदा के ब्यूटी इंस्टीट्यूट में असली प्रोडक्ट हटाकर उनकी खाली बोतलों में नकली प्रोडक्ट भरे जाते हैं। एक छात्रा के ऊपर नकली प्रोडक्ट का इस्तेमाल किया गया था। इससे उसकी स्किन पर एलर्जी हो गई थी। एकेडमी में एक्सपायर प्रोडक्ट का भी यूज किया जाता है। एकेडमी की डायरेक्टर मुस्लिम बच्चों को प्रमोट करती हैं और हिंदू लड़कियों को मुस्लिम लड़कों से कनेक्ट करने के लिए उन्हें टॉर्चर करती हैं। केवल इतना नहीं, छात्रों का आरोप है कि रक्शंदा खान हिंदू लड़कियों को परेशान करती हैं और उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ करती हैं। वह फोन छीनकर रिव्यू डालवाती हैं। आरोप यह है कि रक्शंदा खान हिंदू छात्राओं को माथे पर बिंदी, टीका, सिंदूर और गले में मंगलसूत्र पहनने पर प्रतिबंध लगा रखा है। शादीशुदा लड़की अगर मंगलसूत्र और सिंदूर लगाकर आती है, तो उसे इंस्टीट्यूट में आने नहीं दिया जाता है। दूसरी ओर, मुस्लिम छात्रों और ट्रेनर्स को एकेडमी में नमाज पढ़ने की आजादी है।

एक अन्य छात्रा, स्वाति पाल, ने यहाँ तक कहा कि रक्शंदा हिंदू धर्म को गंदी-गंदी गालियाँ देती हैं। न केवल गाली, बल्कि लैक्मे एकेडमी नामक फैशन इंस्टीट्यूट चलाने वाली रक्शंदा खान पर अब इन छात्राओं ने धर्मांतरण के लिए माइंडवॉशस करने का आरोप भी लगाया है। हालांकि, खबर है कि सिविल लाइंस थाने में रक्शंदा खान, शाहनवाज और एक अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ एफ आई आर दर्ज कर ली गई है। खबर यह भी है कि एकेडमी को फिलहाल सील कर दिया गया है। दोनों बहादुर लड़कियों की हिम्मत को प्रणाम, जिन्होंने न केवल अपना धर्म बचाया है, साथ ही अन्य लोगों को भी जागरूक किया है। - ***सम्पादक***

स्वाध्याय की महिमा और वेदादि शास्त्रों ....

प्रथम पृष्ठ का शेष

वेदों की अनुक्रमणी और वेदपाठ का क्रम

अनुक्रमणी वेद मंत्रों की क्रमबद्ध सूची है। इसमें विभिन्न मंत्रों से संबंधित देवताओं, छन्दों, विभिन्न शाखाओं के अनुवाकों, वर्गों, सूक्तों, मंत्रों के स्वरों आदि के नियमों का वर्णन किया गया है। वेदों के पाठ्यक्रम तथा मंत्रों के विशुद्ध अर्थबोध के लिए अनुक्रमणी महत्वपूर्ण है। वेद पाठ के पद, क्रम, जटा, माला, शिखा, लेखा, ध्वजा, दण्ड, रथ और घन आठ आधार हैं। इन्हें वेदपाठ को सुरक्षित रखने वाले कवच कहा गया है। अनुक्रमणी में ये वेद पाठ के आधार और नियम वर्णित हैं।

वेद भाष्य

वेदार्थ ब्राह्मण ग्रन्थों तथा निरुक्त की सहायता से करना चाहिए। वेद वैदिक संस्कृत में लिखित है। वैदिक संस्कृत में शब्द यौगिक हैं। मध्यकालीन भाष्यकार सायणाचार्य, महीधर, उव्व्ट आदि ने लौकिक संस्कृत में प्रयुक्त रुढ़ शब्दों के सहारे अर्थ करके भारी अनर्थ कर दिया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आचार्य यास्क की शैली पर सही वेद भाष्य किया है।

ऋग्वेद

ऋक् प्रातिशाख्य में लिखा है कि ऋग्वेद की समस्त ऋचाओं का स्वाध्याय करके बड़े यत्न से उनको आदि में सबसे पहले शाकल ऋषि ने शाखा का रूप दिया। शाकल ऋषि ने ही सबसे पहले प्राचीन प्रकृति और पद पाठ युक्त ऋग्वेद संहिता को मंडलों और 10,580 सूक्तों में विभक्त किया। पंडित भगवद दत्त जी ने ऋग्वेद को शाकल संहिता भी कहा है।

ऋग्वेद के सभी मंत्र पद्य में है। इसमें 10 मंडल, 1028 सूक्त व 10522 मंत्र हैं।

यजुर्वेद

'यजुः' शब्द का अर्थ है-यज्ञ। यजुर्वेद में यज्ञों और कर्मकाण्ड का प्रधान्य है। इसलिए इसको कुछ विद्वान्, अध्वरवेद भी कहते हैं। विभिन यज्ञों में जो विशेष मंत्र आवश्यक हैं और जिन विशेष नियमों का पालन करना पड़ता है, उनकी समष्टि का नाम यजुर्वेद है। इसके विभिन्न अध्यायों में विविध यज्ञ क्रियाओं के मंत्र तथा अन्य विधियाँ संग्रहीत हैं।

यजुर्वेद के दो रूप हैं- शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद। प्राचीन पंडित सम्प्रदाय में शुक्ल यजुर्वेद की मान्यता रही है। कृष्ण यजुर्वेद की मान्यता दक्षिण भारत में है। यजुर्वेद की 101 शाखाएँ हैं, किन्तु अब केवल 5 शाखाएँ ही उपलब्धा हैं। इनमें से 2 शाखाएँ शुक्ल यजुर्वेद तथा 3 शाखाएँ, कृष्ण यजुर्वेद की उपलब्धा हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिनीय शाखा का भाष्य किया है। शुक्ल यजुर्वेद में 40 अध्याय तथा 1978 मंत्र हैं। यजुर्वेद के मंत्र गद्य में हैं।

सामवेद

'साम' शब्द का अर्थ है- प्रियवचन। इसे गाने की रीति के नाम से साम कहा जाता है। सामवेद संहिता के दो खण्ड हैं-

(क) पूर्वार्चिक

(ख) उत्तरार्चिक।

पूर्वार्चिक के विषयानुसार चार अध्याय हैं-

1. आग्नेय काण्ड 2. एन्द्रकाण्ड 3. पवमान काण्ड 4. आरण्यक काण्ड।

ये चारों काण्ड 6, प्रपाठकों में बंटे हुए हैं। प्रपाठकों में अर्धा प्रपाठक और दशतियों के विभाग हैं। अध्यायों में खण्डों के विभाग हैं।

उत्तरार्चिक में एक छन्द की, एक स्वर की तथा एक तात्पर्य की तीन-तीन ऋचाओं को लेकर एक-एक सूक्त कर दिया है। उत्तरार्चिक में 7 भाग एवं दशरात्र, संवत्सर, एकाह, अहीन, सत्र, प्रायश्चित तथा औमुद्र प्रपाठक है। इन प्रपाठकों के भी अर्ध प्रपाठक हैं।

प्रथम प्रपाठक में 12 खण्ड हैं। द्वितीय प्रपाठक में भी 12 खण्ड हैं। तृतीय प्रपाठक में 14 खण्ड हैं। चतुर्थ प्रपाठक में 15 खण्ड हैं। पंचम प्रपाठक में 13 खण्ड हैं। षष्ठ प्रपाठक में 15 खण्ड हैं। सप्तम प्रपाठक में 12 खण्ड हैं तथा अष्टम प्रपाठक में 13 खण्ड हैं एवं नवम प्रपाठक में 13 खण्ड हैं।

सामवेद में कुल 1873 मंत्र हैं जिनमें पूर्वार्चिक में 650 मंत्र तथा उत्तरार्चिक में 1223 मंत्र है। सामवेद के मंत्र गेय हैं।

अथर्ववेद

अथर्ववेद में 20 काण्ड, 36 प्रपाठक, 760 सूक्त तथा 6000 मंत्र हैं। अथर्ववेद में पद्य और गद्य दोनों का प्रयोग हुआ है किन्तु अधिकांश मंत्र पद्य में हैं। अथर्ववेद की 9 शाखाएं थी। अब केवल दो शाखाएँ-शौनक और पैप्लाद उपलब्ध हैं। ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ में लिखा है कि वाणी और मन से यज्ञ होता है। प्रथम तीन वेद वाणी हैं और चौथा अथर्ववेद मन है। प्रथम तीन वेदों में एक पक्ष का संस्कार होता है तथा अथर्ववेद का विद्वान यज्ञ के समय ब्रह्मा का आसन ग्रहण करता है। वह यज्ञ का प्रधान-पुरोहित होता है। वह ही समस्त याज्ञिक कर्मों का निरीक्षण और संचालन करता है। अथर्ववेद पढ़ने पर ज्ञान राशि का विशाल होना निश्चित है, क्योंकि अथर्ववेद में रोग निवारण, दुर्देवरक्षा, शत्रुनाश, देशभक्ति, विज्ञान, गोरक्षा एवं ब्रह्मज्ञान तथा मोक्ष प्राप्ति के उपदेश हैं।

वैदिक वांगमय

वैदिक वांगमय में विश्व का प्राचीनतम व विशाल प्रमाणिक साहित्य है। वैदिक वांगमय के ब्राह्मण ग्रंथों, उपनिषदों, षड्दर्शनों, आरण्यकों, मनुस्मृति, कल्पसूत्रों आदि महान् ग्रंथों जैसे रामायण और महाभारत आदि धर्म, इतिहास एवं काव्य ग्रंथों ने अपना आधार वेद को बनाया है। ये धर्म ग्रंथ अपनी प्रेरणा वेद से प्राप्त करते हैं और वेद को ही अंतिम प्रमाण मानते हैं। वे जिस आर्य संस्कृति का चित्रण करते हैं, उसका आदि स्त्रोत वेद हैं। वेद स्वतः प्रमाण हैं और अन्य उपरोक्त ग्रंथ परतः प्रमाण हैं। इन ग्रंथों में जो प्रक्षिप्त अंश हैं, वे सब वेद विरुद्ध होने के कारण अमान्य हैं।

वैदिक वांगमय अन्तर्गत शास्त्र

उपवेद (अर्थवेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, आयुर्वेद)

वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष)

ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक, उपनिषद, दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र (मनुस्मृति, याज्ञ-वल्क्य स्मृति), बाल्मीकि रामायण, महाभारत, गीता।

सहायक ग्रंथ

अर्थवेद - कौटिल्य अर्थशास्त्र, भतृर्हरिशतक, पंचतंत्र, कामसूत्र

गांधर्ववेद - नारद संहिता, भरतमुनि का नाट्य शास्त्र।

आयुर्वेद - धनवन्तरि सूत्र, चरक संहिता, सुश्रुत संहिता।

उपवेद, वेदांग, उपांग

4 उपवेद, 6 वेदांग तथा 6 उपांग (दर्शनशास्त्र) को वेद के अन्तर्गत माना जाता है। इनका वेदों पर आश्रित होने का अभिप्राय यह है कि इनमें जिन विषयों का वर्णन किया गया है, वे सब मूल रूप में वेदों में विद्यमान हैं, उन्हीं की व्याख्या उपवेद, वेदांग तथा उपांगों में की गई हैं। उपवेदों का अध्ययन भी प्रत्येक वेद के साथ-साथ वेद के ज्ञान की परिपूर्णता के लिए आवश्यक है। उपवेद और वेदांग किन्हीं पुस्तकों के नाम नहीं हैं। इनके एक-एक शीर्षक (नाम) के अन्तर्गत अनेक सहायक ग्रन्थ आ जाते हैं।

वेदांग

वेदों की भाषा, वाक्य प्रणाली, शब्द तथा भाव का ज्ञान कराने वाले शास्त्रों को वेदांग कहते हैं। मुंडकोपनिषद के श्लोक 1-1-5 में लिखा है, शिक्षा, कल्पो, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिषम् इति। शिक्षा वेदों की नासिका, कल्प-वेदों के हाथ, व्याकरण-वेदों का मुख, निरुक्त-वेदों के कान, छन्द-वेदों के चरण, ज्योतिष-वेदों के नेत्र हैं।

धानुर्वेद

इस उपवेद में युद्ध विद्या और शस्त्रों के निर्माण का सुन्दर वर्णन है। इसमें शब्द शक्ति या मंत्रचलित अस्त्र-शास्त्रों के निर्माण की विधि बताई गई है। इसमें धनुषबाण, भुशुण्डि, शतघ्नी तथा ब्रह्मास्त्र आदि अत्यन्त घातक तथा उच्च कोटि के अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण की व्याख्या है। इसके सहायक ग्रन्थ-विश्वामित्र रचित 'धनुर्वेद', वैशम्पायन लिखित 'धनुर्वेद, द्रोणाचार्य लिखित 'धनुष प्रदीप' इनमें से अधिकांश ग्रन्थ वर्तमान में अनुपलब्ध हैं। धनुष चन्द्रोदय नामक ग्रन्थ में परमाणु से धनुष और बाण का निर्माण व प्रयोग लिखे हैं।

'धनुष चन्द्रोदय' में प्रकरण हैं।

(1) परमाणु परिचय और एकत्र करने के यंत्र एवं धनुष-बाण का निर्माण

(2) छिपने और छिपाने की विधि

(3) कुलिश, पल्टिश, चामर की निर्माण विधि और उनका प्रयोग

(4) परमाणु प्रकार, शक्ति निर्माण

(5) शक्ति प्रयोग-खड्ग विधि

(6) ब्रह्मास्त्र, रुद्रास्त्र, वैष्णवी, शक्ति पट्टिशका विधान व प्रयोग

(7) पाश निर्माण तथा पाश प्रयोग

(8) पाश मोचन विधि

(9) अस्त्र-शस्त्र की स्तम्भन विधि

(10) काटने का प्रयोग

(11) अग्नि वर्षण-जलवर्षण

(12) ज्वर प्रयोग, औषधि प्रयोग

गान्धर्व वेद

यह उपवेद गायन, वादन और नृत्य एवं नाट्य की विद्या का वर्णन स्तुति रूप में करता है। इसके अन्तर्गत विभिन्न राग-रागनियों का परिचय, वाद्य यंत्रों-यथा वीणा, बांसुरी, मृदंग, खरताल, सारंगी व मंजीर आदि का परिचय एवं विभिन्न प्रकार के शास्त्रीय नृत्यों-भरतनाट्यम, कत्थक तथा कुचीपुडी आदि का परिचय सम्मलित है। इसके अन्तर्गत भरतमुनि का नाट्य शास्त्र भी आता है। इसके अन्य सहायक ग्रन्थ-नारद संहिता, वामदेव रचित 'संगीत रत्नाकर' श्रंगीऋषि रचित 'संगीत दर्पण', शौनक ऋषि द्वारा रचित 'संगीत प्रदीप' तथा सनत्कुकार लिखित 'संगीत प्रभा' प्रसिद्ध है इनमें से अधिकांश ग्रन्थ अनुपलब्ध है।

आयुर्वेद

आयुर्वेद में मनुष्य के स्वास्थ्य की रक्षा के उपायों और रोगी की चिकित्सा का वर्णन किया गया है। इस उपवेद में निम्नलिखित विषयों का वर्णन है।

(1) औषध विज्ञान **(Medicine)**

(2) शरीर विज्ञान **(Physiology)**

(3) स्वस्थ वृत्त **(Hygiene)**

(4) शल्य चिकित्सा **(Surgery)**

(5) प्रत्यक्ष शरीर **(Anotomy)**

(6) रसायन शास्त्र **(Chemistry)**

सहायक ग्रन्थ

(1) धन्वन्तरि सूत्र (2) सुश्रुत संहिता

(3) चरक संहिता (4) ब्रह्म संहिता

(5) च्यवन ऋषि प्रशांत 'रूपाणवि'

अंतिम दो ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज अमर कालोनी
लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-24

प्रधान : श्री जितेन्द्र कुमार डाबर
मन्त्री : श्री ओम प्रकाश छाबड़ा
कोषाध्यक्ष : श्री सुभाष चन्द आर्य

झलकियां – अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, न्यूयार्क : 18–21 जुलाई, 2024

आचार्य डॉ. कमलेश शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ एवं उपस्थित आर्य संन्यासीगण एवं यजमान परिवार

कार्यकर्ताओं, अधिकारियों एवं अतिथियों का स्वागत प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम

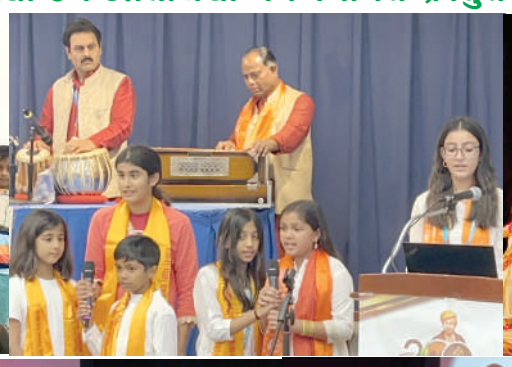

प्रात:कालीन सत्र में व्यायाम एवं योगाभ्यास

विभिन्न देशों के आर्य समाजों/प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधियों का सम्मिलित स्मृति चित्र

झलकियां – अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, न्यूयार्क : 18–21 जुलाई, 2024

साप्ताहिक स्वाध्याय

बम्बई में आर्य समाज की स्थापना

गतांक से आगे-

यह नियम तथा आगे के कुछ और नियम भी इन सम्पूर्ण नियमों को एकदेशी बना देते हैं। इन नियमों को बनाते हुए बम्बई की दशाओं को विशेषतया ध्यान मेंरा गया था। सातवें नियम में केवल दो अधिकारी नियत करने का निर्देश है-एक प्रधान, दूसरा मन्त्री अभी उपप्रधान, उपमन्त्री आदि की रचना की आवश्यकता नहीं समझी गई। इस नियम का दूसरा भाग बड़े महत्त्व का है-पुरुष और स्त्री दोनों ही समाज के सभासद् बन सकेंगे। यह उदार नियम आर्यसमाजों में प्राय: उपेक्षा की दृष्टि से देश जाता है। स्त्री-समाज अलग खोल दी जाय-इससे शायद उतनी हानि न हो, जितनी मुख्य आर्यसमाज से स्त्रियों का बहिष्कार करने से होती है। इसके परिणामस्वरूप स्त्रियों का दृष्टि-क्षेत्र बहुत संकुचित हो जाता है। उनका ज्ञान पूरी तरह बढ़ने नहीं पाता। वे अपनी नियत परिधि से बाहर नहीं निकलने पाती। यदि पुरुष और स्त्री एक ही धार्मिक संगठन में शामिल हों, इकट्ठै बैठें और कार्यकारिणी में मिलकर इकट्ठै ही आवश्यक विषयों पर विचार करें, तो इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि स्त्रियों के ज्ञान में बहुत वृद्धि हो, आर्यसमाज की शक्ति दुगुनी हो जाय और कार्य को पुष्टि मिले।

आठवां नियम आर्यसमाज के सभासद् की योग्यता का वर्णन करता है- इस समाज में सत्पुरुष, सदाचारी और परोपकारी सभासद् लिये जाएंगे। यद्यपि देने में यह नियम छोटा और अपर्याप्त-सा दिखाई देता है, परन्तु आश्चर्य है कि इस नियम में महर्षि का हृदय स्पष्टता से प्रतिबिम्बित है। समाज का सभासद् सत्पुरुष हो, सदाचारी हो, अर्थात् आर्य आचरणों वाला हो। आर्य सभासद् बनने के लिए श्रेष्ठ आचरण को मुख्य माना गया है। वर्तमान 10 नियमों में सदाचार की चर्चा इतनी स्पष्टता से नहीं है। यही कारण है कि कभी-कभी करने की अपेक्षा मानने की महिमा अधिक बढ़ा दी जाती है। प्रारम्भिक नियम करने की महिमा अधिक मानते थे। दुराचारी, असत्पुरुष क्षणभर भी समाज का सभासद् नहीं रहना चाहिये-बम्बई वाले नियमों का यह सार है। 10वां नियम सातवें दिन सत्संग करने का आदेश करता है। पहले यह सत्संग शनिवार को होता था, बाद में अधिक अनुकूलता देकर रविवार को होने लगा।

11वां नियम कार्यक्रम का प्रतिपादन करता है। कार्यक्रम में गान, मन्त्रपाठ, मन्त्रों की व्याख्या आदि के अतिरिक्त परमेश्वर, सत्यधर्म, सत्यनीति, सत्योपदेश आदि का प्रतिपादन है। इस नियम में साप्ताहिक सत्संग के क्षेत्र-विस्तार का दिग्दर्शन करा दिया गया है। सत्यधर्म और सत्यनीति को पृथक् रखा गया है। सत्यधर्म, सिद्धान्त-रूपी धर्म और उसका व्यावहारिक प्रयोग सत्यनीति कहलाता है। आर्यसमाज में केवल सिद्धान्तों पर ही विचार न होगा, उनके व्यावहारिक प्रयोग पर भी विचार किया जाएगा। जो लोग यह समझते हैं कि आर्यसमाज में केवल मूल सिद्धान्तों पर ही विचार होता रहे, उनके व्यावहारिक प्रयोग पर कोई ध्यान न दिया जाय, वे 11वें नियम पर ध्यान देंगे तो उनका सन्देह दूर हो जाएगा। 12वें नियम में आय का शतांश चन्दे के रूप में देने का विधान रखा गया है और बताया गया है कि चन्दे की आय से आर्यसमाज, आर्य विद्यालय और आर्य समाचारपत्र चलाए जाएं। आर्य विद्यालय का विचार आर्यसमाज की आधारशिला रखने के साथ ही उत्पन्न हो गया था, यह कोई नया समारोह नहीं है। महर्षि जी का दृढ़ आशय प्रतीत होता है कि आर्य-पुरुषों की सन्तान को शिक्षित करने के लिए आर्य विद्यालय खोले जाएं। 16वां नियम आर्य विद्यालय के उद्देश्य को भी स्पष्ट करता है। उसमें आर्य विद्यालय का यह कार्यक्रम बताया गया है

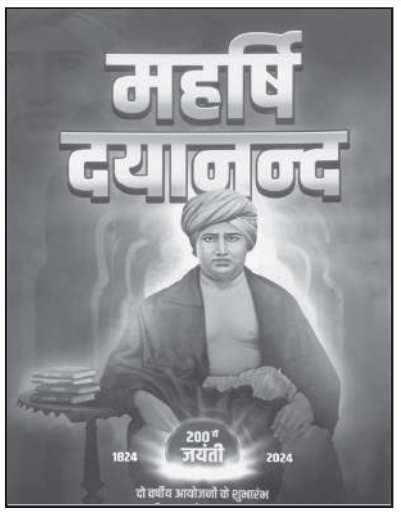

कि आर्य विद्यालय में वेदादि सनातन आर्ष ग्रन्थों का पठन-पाठन हुआ करेगा और वेदोक्त रीति से ही सत्य-शिक्षा सब पुरुष और स्त्रियों को दी जाएगी। इस नियम का अभिप्राय स्पष्ट है। आर्य-विद्यालय का उद्देश्य आर्यसन्तान को वैदिक शिक्षा देना समझा गया था, न कि केवल प्रचारक बनाना। 14वें और 15वें नियम में वैदिक स्तुति, प्रार्थना, उपासना के अतिरिक्त संस्कारों का करना आर्यमात्रा के लिए आवश्यक बताया गया है।

-क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Establishing Arya Samaj in Mumbai

Lessons of Satya Shiksha will be given for all the men and ladies Aim of Vedic school was to teach Vedic lessons to Arya boys and girls other than preparing Pracharaks. In 14th and 15th rule Vedic State, (Prayer) and and upasama was to be performed with giving sanskars to the students. 17th rule is very important. A very high and big sidhant has been explained. There were thinkers of two types in every country. In 1st type there were those people who considered Swadesh as the best of all countries and working for its welfare was their Aim of life in 2nd types there were those people who considered as welfare of the world a ideal view and only welfare of own country views of lower level. In 17th rule both have been joined beautifully. The rule is:

"There will be two types of Shudhi (purification), One is working for welfare of all and the other is good behavior. Both the ways will be improved and welfare of the world will be kept in mind." Swadesh has not been ignored. But its main object is welfare and progress of the world. Welfare of Swadesh is the duty of every citizen for that both comforts of this life and life to come (This Lok and Parlok) are important. This rule has not been fixed only for people of Bharat but for people of all the countries. All should try to be useful for own country. But idea of welfare of own country should be for welfare of the world. Without the feeling of welfare of the world feeling of welfare one's own country only is a useless and without idea of welfare of world without welfare of own country is like trying to catch the moon. Rules from 18 to 25 guide the workers to try for duties regarding management. 26th rule has a small but very useful advice. If you want to appoint servant for your house or shop, try to find servant related to Arya Samaj. No out side person should be appointed as your worker or servant if the Arya Samaji person is available. There is special touch of religious idea in 26th rule but there is in such message of religious idea in other rules.

Among a great number of rules this rule appears to be illiberal. But this is the source to improve their condition. Whatever the community it may be. If he becomes Arya, no body will shirk in accepting him as a servant. So it will be understood that there is not feeling of Communalism but there is benefit of the servant. In Islam the method used to improve condition of slaves, keeping that in view then rule should to dealt with then at will not be difficult to consider the correctness of the rule. In the 28th rule it will be necessary to consult all the members for increasing or decreasing number of rules. This is the case of Arya Samaj of Mumbai. It is no doubt that this is incomplete there is lack of important practical rules, many practical points have been ignored like decision should be taken with the consent of all or majority of members present in the discussion. How much quantity of majority should be there to change the rule duration of time of election (after how many years) is to be decided. Such practiced aspects have been left in rules. There are many practical rules present in it. But they are incomplete and Vague, Even than it is right to say that these rules show the will of Swamiji clearly. Aim has been clearly decided. Other rules also are as per the wish of Swamiji. There is one more point to be thought. It is very near the organisation of Brahma Samaj clearly, but not of rules. It is not so strange. It is beyond doubt that selection of rules has been done quite independently. It was not copying of others it seems that the idea of organisation was according to the wish of Swamiji. There is one more point. These rules are clearly effected by the organisation of Brahmo Samaj but not that of rules but about practical organisation. Decision of rules was taken by independent way. It was not the copy of any organisation.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login www.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

बाल बोध

जीवन में सफलता के लिए आवश्यक है - लक्ष्य की साधना

लक्ष्य सही हो तो वही मनुष्य को मंजिल से मिलाता है। इसके विपरीत अगर जीवन का लक्ष्य ठीक न हो तो यात्रा कितनी भी और कैसी भी की जाए मंजिल नहीं मिलती। उचित लक्ष्य ही मनुष्य को सफलता दिलाता है। ऊंचाई पर स्थित होने के लिए लक्ष्य की साधना जरूरी है। जीवन में लक्ष्य बहुत महत्वपूर्ण है। सही लक्ष्य वाले ही अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

जीवन के लक्ष्य कैसे हों?

आप अपने जीवन का वही लक्ष्य चुनिए, जिसमें निम्नलिखित महत्वपूर्ण तत्व शामिल हों–

★ ऐसा लक्ष्य जिसे पूर्ण करना अधिक कठिन न हो।
★ ऐसा लक्ष्य जो आपको महान बनने में मदद करे।
★ ऐसा लक्ष्य जिससे आपका भविष्य उज्ज्वल बने।
★ ऊपर निर्दीष्ट लक्ष्य सचमुच मानव प्रगति में सहायक होता है।
★ धनोपार्जन के अलावा मानवहित भी आपके जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।
★ आप व्यक्तिगत स्वार्थ को ध्यान में रखकर लक्ष्य न चुनें बल्कि सबके भले की सोचें।
★ आप दूसरों से ईर्ष्या, वैर या प्रतिशोध निकालने के लिए लक्ष्य न चुनें।
★ आप कुसंग से प्रभावित होकर लक्ष्य न चुनें।
★ आप दूसरों के कहे अनुसार लक्ष्य निर्धारित न करें। अपने विवेक से जीवन का लक्ष्य चुनिए।
★ जीवन को भटकाने वाला लक्ष्य कभी न चुनें।
★ दूसरों की होड़ से लक्ष्य निर्धारित न करें। जिसमें आपका भला हो तथा जो आपके अनुकूल हो, वही लक्ष्य चुनें।
★ कभी ऐसा लक्ष्य न चुनें जिसका आपको बाद में पछतावा हो।

इस प्रकार यथार्थ एवं प्रतिकूल लक्ष्य आप कभी न चुनें। जैसा कि ऊपर बताया गया है, आप अपने विवेक के अनुसार ही अपने लक्ष्य का चयन करें तो आपके लिए बेहतर होगा। आप अपने जीवन में सदैव श्रेष्ठ लक्ष्य चुनें। लक्ष्य जितना श्रेष्ठ होगा, उसे प्राप्त करने में मुश्किलें भी अधिक होगी। लक्ष्य की बाधाओं को दूर करने विषय में सोचिए। परिस्थितियों पर गम्भीर रूप से विचार करने पर आप उन मुश्किलों का कोई-न-कोई हल अवश्य निकाल लेंगे।

केवल अच्छा लक्ष्य चुनना ही काफी नहीं है। लक्ष्य चुनकर उसे प्राप्त करने में काफी सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। लक्ष्य-प्राप्ति के लिए सर्वप्रथम आपको कार्य में बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। जब आप लक्ष्य के अनकूल कार्य करेंगे तथा बहुत मेहनत व लगन से कार्य करेंगे तभी सफलता को प्राप्त कर सकेंगे। लक्ष्य के मुताबिक लक्षण धारण करें।

केवल लक्ष्य श्रेष्ठ होने से ही सब कुछ नहीं होता। लक्ष्य के अनुरूप लक्षण, क्षमता तथा विशेषताएं धारण करना भी जरूरी है। जब हम लक्ष्य के अनुरूप लक्षण धारण करेंगे तभी हमको सफलता मिल पाएगी।

कॉलेज के विद्यार्थियों में सबका लक्ष्य अलग-अलग होता है। कोई पढ़-लिखकर डॉक्टर, कोई वकील या जज, कोई कलेक्टर या पुलिस ऑफीसर तो कोई सेना का बड़ा अधिकारी बनने की तमन्ना रखता है।

केवल तमन्ना रखने से काम नहीं चलता। विद्यार्थी को अपने लक्ष्य के अनुरूप पढ़ाई की मेहनत करनी पड़ती है। लक्ष्य के अनुरूप अनेक लक्षण तथा क्षमताएं धारण करनी पड़ती हैं। तब जाकर उसे अपने उद्देश्य में सफलता मिलती है। गलत लक्ष्य चुनने से बचें। गलत लक्ष्य चुनेंगे तो आपको कई प्रकार की हानियां उठानी पड़ेंगी। यथार्थ लक्ष्य की वजह से आप जीवन में कभी पूर्ण सफल नहीं हो पाएंगे तथा सदा भटकते रहेंगे। जिन लोगों के जीवन का लक्ष्य सही होता है वे अपने कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करते हैं तथा ऐसे लोग कभी इधर-उधर भटकते भी नहीं हैं। कुसंग के प्रभाव से आदमी बुरे उद्देश्य की ओर चलने का निर्णय ले लेता है। जब हम जान-बूझकर कांटों भरा रास्ता अपना लेते हैं तो हमे पग-पग पर दु:ख और परेशानी मिलती है।

गलत लक्ष्य चुनकर हम किसी के जीवन का भला नहीं कर सकते और न स्वयं हमारा भला हो पाता है। गलत रास्ते जीवन को उलझाने वाले होते हैं जिसके कारण मानव का स्वभाव दूसरों को दु:ख देने या परेशान करने का हो जाता है। यथार्थ लक्ष्य जीवन में सफलता ही नहीं बल्कि सुख- शान्ति भी दिलाता है। वह मार्ग हमेशा भलाई और परोपकार का ही होता है। जिस मार्ग से होकर व्यक्ति स्वार्थी बन जाए उसे सही नहीं कहा जा सकता।

यदि हमारा लक्ष्य सही है तो हमें अपने कर्म से संतोष होना चाहिए। जो लोग रात-दिन दूसरों की सेवा में लगे रहते हैं, वे परोपकारी होते हैं। दूसरों के दु:ख दूर करने के कारण उन्हें जीवन में कभी दु:ख की प्राप्ति नहीं होती।

अपने जीवन-लक्ष्य में हम परोपकार को भी शामिल करें क्योंकि इसके बिना मनुष्य को कभी स्थायी सुख-शान्ति की प्राप्ति नहीं होती। जो लोग अपने ही स्वार्थ के कार्यों में व्यस्त रहते हैं वे कार्य-बोझ बढ़ जाने पर तनावग्रस्त एवं दु:खी हो जाते हैं जबकि परोपकारी व्यक्ति कार्य बढ़ने पर प्रसन्न रहता है।

जीवन के लक्ष्य कैसे हों?

आप अपने जीवन का वही लक्ष्य चुनिए, जिसमें निम्नलिखित महत्वपूर्ण तत्व शामिल हों–

★ ऐसा लक्ष्य जो समाज के हित में हो।
★ ऐसा लक्ष्य जिसमें आपकी आत्मोन्नति समाई हो।
★ ऐसा लक्ष्य जिसमें आपके जीवन की प्रगति शामिल हो।
★ ऐसा लक्ष्य जो आपको मानसिक संतुष्टि दिला सके।
★ ऐसा लक्ष्य जिससे आपका जीवन चरित्र बने या जो चारित्रिक उत्थान की दृष्टि से उत्तम हो।

वैदिक योग ध्यान एवं सिद्धांत प्रशिक्षण

(3 +1) वर्षीय वैदिक योग ध्यान एवं सिद्धांत प्रशिक्षण व वैदिक प्रवक्ता/प्रचारक/उपदेशक निर्माण पाठ्यक्रम/कोर्स + 1 वर्ष अंग्रेजी में भी प्रस्तुति देने हेतु योग्य बनने के लिए पुरुष वर्ग में प्रशिक्षण।

मार्गदर्शन, प्रशिक्षण एवं सान्निध्य-
आचार्य आशीष आर्य, दर्शनाचार्य
आचार्य आत्मप्रकाश आय, व्याकरणाचार्य एवं सहयोगी अध्यापक

-: आयोजक :-
आत्मोन्नति केन्द्र भड़ताना, जींद, हरियाणा'
संपर्क- 901511688, 9416773617

आर्य दैनन्दिनी-2025 (डायरी) का प्रकाशन

आपको विदित है कि आर्य प्रकाशन द्वारा प्रत्येक वर्ष "आर्य दैनन्दिनी" का प्रकाशन किया जाता है। इसमें वैदिक संन्यासियों, विद्वानों, विदुषियों, भजनोपदेशकों, प्रमुख आर्य समाजों तथा आर्ष गुरुकुलों के नाम व दूरभाष नम्बर प्रकाशित होता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप अपने नाम के साथ पूरा पता तथा दूरभाष नम्बर भेजें, जिससे सही नम्बर प्रकाशित किया जा सके। यदि आपका नम्बर अथवा पता बदल गया है तो नया नम्बर व पता भी भेजें। यह आप 10 सितम्बर 2024 तक पत्र या मेल - aryaprakashan@gmail.com अथवा 9868244958 पर वाट्सऐप द्वारा भेजने की कृपा करें, जिससे उसे भली से प्रकार आर्य दैनन्दिनी में प्रकाशित किया जा सके। **- संजीव आर्य,**
आर्य प्रकाशन, एस.-524ए, स्कूल ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

अब

amazon

पर भी उपलब्ध

अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें

www.vedicprakashan.com

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

प्रथम पृष्ठ का शेष

3. प्रश्नपत्र को भरकर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001'** के पते पर (प्रश्नोत्तरी को फोल्ड करके लिफाफे में) भेजें अथवा विद्यालय/संस्था की ओर से सभी प्रश्न उत्तर के साथ कॉमिक एकत्रित करके भी भेजे जा सकते हैं।

4. दिनांक **1 सितम्बर 2025** से पूर्व प्राप्त होने वाले उत्तर पत्र ही प्रतियोगिता में सम्मिलित होंगे। यह तिथि आगे बढ़ाने का अधिकार संयोजक का होगा।

5. उत्तर पत्रों की पूर्ण जांच के पश्चात् सभी ठीक उत्तर वाले पत्रों को पुरस्कार योजना में सम्मिलित किया जाएगा। पुरस्कार संयोजक समिति द्वारा बनाई गई तीन सदस्यीय निर्णायक समिति द्वारा अन्तिम रूप से घोषित किया जाएगा।

6. निर्णायकों की समिति का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा तथा उसे कहीं भी चुनौती नहीं दी जा सकेगी।

7. पुरस्कृत/विजेता बच्चों के नाम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **'साप्ताहिक आर्यसन्देश'** में दिए जायेंगे तथा पृथक पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा एवं बच्चों के नाम सभा की वेबसाइट **www.thearyasamaj.org** पर प्रदर्शित किये जायेंगे।

8. सभी पुरस्कार **'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2025'** में दिल्ली के अवसर पर प्रदान किए जायेंगे जिसकी सूचना विजेताओं को अग्रिम भेजी जाएगी। यह योजना हिन्दी तथा अन्य भाषाओं की कॉमिक पर समान रूप से लागू होगी।

9. इस कॉमिक को सुरक्षित रखें क्योकि प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार लेने हेतु कॉमिक की प्रति लाना / भेजना अनिवार्य होगा। - ***संयोजक***

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 29 जुलाई, 2024 से रविवार 4 अगस्त, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 1-2-3/08/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 31, जुलाई, 2024

प्रतिष्ठा में,

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

के अन्तर्गत अखिल भारतीय स्तर पर

आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न सेवा प्रकल्पों की श्रृंखला में

बालवाड़ी प्रकल्प अथवा शिक्षा केंद्र में शिक्षक बनने क सुनहरा अवसर

बालवाड़ी प्रकल्प/शिक्षा केंद्र में अध्यापक बनने हेतु आवश्यक योग्यताएं

आयु 18 वर्ष से अधिक | न्यूनतम 12वीं पास | अध्यापन कार्य में रुचि

अपने गाँव/बस्ती में नयी बालवाड़ी/शिक्षा केंद्र शुरू करने हेतु निम्नलिखित लिंक पर फॉर्म भरें या QR Code स्कैन करें

bit.ly/balwadiapply

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : 9311413920

आर्य समाज की पहल

सुशील राज

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान

द्वारा

संघ लोक सेवा आयोग की

सिविल सेवा परीक्षा IAS / IPS / IRS etc.. की उत्तम तैयारी हेतु आर्य प्रतिभा छात्रवृत्ति परीक्षा

ऑनलाइन परीक्षा दिनांक 15 सितंबर 2024, पूर्वाह्न 11:00 बजे

आवेदन की अंतिम तिथि - 31 अगस्त 2024

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

भारत में फेले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 मुद्रित मूल्य ₹ 80 प्रचारार्थ मूल्य ₹ 60

विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 मुद्रित मूल्य ₹120 प्रचारार्थ मूल्य ₹80

पॉकेट संस्करण मुद्रित मूल्य ₹80 प्रचारार्थ मूल्य ₹50

विशिष्ट पॉकेट संस्करण मुद्रित मूल्य ₹150 प्रचारार्थ मूल्य ₹ 100

स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹120

उपहार संस्करण मुद्रित मूल्य ₹1100 प्रचारार्थ मूल्य ₹750

सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द मुद्रित मूल्य ₹200 प्रचारार्थ मूल्य ₹ 130

सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द मुद्रित मूल्य ₹250 प्रचारार्थ मूल्य ₹170

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph : 011-43781191, 09650522778

E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group

Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE TOWARDS CREATING A CLEANER | GREENER | SAFER TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002

91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह